नागार्जुन के गद्य की भाषिक संरचना एवं शिल्प विधान

डॉ0 सार्वण्य ह्रषिकेश्वर

भाषा सम्पदा, समृद्ध और समर्थ है जिसमें भावना की गहराई और अनुभूति की गहनता है। इनका भाषिक तेवर गाँव की खूशबू और हरे–भरे अंचल की सुगन्ध का परिचय प्रदान करता है तथा जिस पर चिंतन का गहरा रंग चढ़ा हुआ है। कहीं–कहीं दार्शनिक, आत्मदर्शी व भाव प्रवणता के कारण भाषा चिन्तन प्रधन तो हुई है लेकिन लचीली व लालित्यपूर्ण है। मैथिली, हिन्दी, संस्कृत, पालि, प्राकृत, बांग्ला, सिंहली, तिब्बती भाषाओं का ज्ञान उनकी गतिशील सक्रियता और प्रतिबद्धता का प्रमाण है जिस कारण भाषा में बदलाव लाया गया है। 'नागार्जुन की भाषा में किताबीपन नहीं, वातावरण की गंध है, जिसमें उनके पात्र जीते–मरते, सांस लेते छोड़ते हैं। पात्रों का जीवन सीमाओं, आर्थिक विषमताओं में बीतता है उनकी भाषा उस जीवन का सही दस्तावेज है।'